संप्रेषण - व्यवस्था

(भाषा के संदर्भ में)

● डॉ. इशरत खान

संप्रेषण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य जानकारी देता और लेता है। संप्रेषण-व्यवस्था हमारे जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि हम यह कहें कि इसके बिना पूरा समाज ही गूंगा है तो शायद अतिशयोक्ति न होगी। मनुष्य की भावनाओं को, उसकी मूलभूत आवश्यकताओं को, अभिव्यक्ति का वरदान देकर, समाज को सभ्यता के उच्च सोपान पर ले जाने वाली यह व्यवस्था, हमें चेतन इकाई के रूप में प्रतिष्ठित करती है। लाखों वर्षों की मानवीय सभ्यता के इतिहास में न जाने वह कौन-सी सुनहरी सुबह थी जिसने अज्ञान, निर्लिप्तता और तटस्थता से भरे आदिम मानव के हाथ में प्रकाश का यह स्वर्णिम दीप धर दिया और फिर देखते ही देखते हजार टुकड़ों में बँटा, असुविधाओं का जीवन जीता मानव, एकता के सूत्र में बंधा सार्थक मानव-समुदाय के रूप में परिवर्तित हो गया। समाज को वाणी देने, अर्थ देने और सार्थक बनाने में इसका योगदान निश्चय ही अद्वितीय रहा होगा। यह तथ्य सर्वविदित है कि मानव से लेकर पशु तक समाज में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तक समाज में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रहता है। यह आवश्यकताएँ सिर्फ भौतिक वस्तुओं तक सीमित नहीं बल्कि भावात्मक सुरक्षा तथा प्रेम की नैसर्गिक आवश्यकता भी इसके अविभाज्य अंग हैं। इन सब की पूर्ति संप्रेषण के माध्यम से ही संभव हो पाती है। एक नवजात शिशु भी अपनी भूख का संकेत 'माँ' को दे ही देता है। अतः यदि हम कहें कि संप्रेषण या अभिव्यक्ति हमारी प्रकृति में है तो शायद गलत न हो।

संप्रेषण की आवश्यकता हमें हर कदम पर होती है। सुबह से लेकर हम रात तक इसी के माध्यम से विभिन्न कार्य संपादित करते हैं। इसके बिना जीवन कितना जड़, अर्थहीन तथा असुविधाओं से भर जाएगा, इसकी कल्पना भी आज करना मुश्किल जान पड़ता है। विशुद्ध शारीरिक स्तर पर भूख, कामेच्छा आदि से लेकर मानसिक जिज्ञासा, संवेदना, आशा, आकांक्षा सभी की अभिव्यक्ति मानव संप्रेषण के किसी-न-किसी माध्यम से ही करता है। बच्चे की भूख हो, माँ की ममता हो, पिता का अनुशासन हो या प्रणय पत्र-सा गंधभरा किशोर का मन हो, सभी को संप्रेषण, सार्थक अभिव्यक्ति का अवसर देता है। इसके बिना मानव-मन कैसे सीलन से भर जाता, यह कहने की आवश्यकता नहीं। मन की संकुल गलियों में कुंठित पड़े भावों को संप्रेषण मुक्ति का आकाश देता है, ताजी जलधाराओं को रफ्तार देता है। संक्षेप में, संप्रेषण हमारे जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण

भूमिका निभाता है, जिसपर प्रश्न उठाने की कोई गुंजाइश नहीं।

मनुष्य स्वयं को कई तरह से अभिव्यक्त करता है। 'जैसे - भाषा के माध्यम से, लिखित रूप से तथा यांत्रिक ढंग से। लिखित के अंतर्गत तार और पत्र-पत्रिकाएँ आदि आते हैं। यांत्रिक के अंतर्गत हम टी.वी., टेलीफोन, रेडियो, वीडियो और कम्प्यूटर आदि को ले सकते हैं।

इन माध्यमों में सबसे महत्त्वपूर्ण माध्यम है, 'भाषा'! भाषा के माध्यम से हम अपनी भावनाओं को अधिक बेहतर ढंग से व्यक्त कर सकते हैं। यह माध्यम अधिक प्रचलित है। असभ्य और पिछड़े-से-पिछड़े समाज में भी भाषा किसी-न-किसी रूप में मौजूद है।

भाषा का उदय निश्चय ही लिपि के आविष्कार से पहले हुआ होगा। इस प्रकार भाषा का संबंध जीवन से है और लिपि का संबंध सभ्यता से है। अतः सभ्यता के विकास के बहुत पहले से ही मानव स्वयं को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता आ रहा है। यह निश्चय ही उसकी भावनाओं को अधिक सहजता से अभिव्यक्ति देती है।

मनुष्य समाज में जानकारी विभिन्न ढंग से देता और लेता है। वह व्यक्तिगत स्तर पर भी जानकारी देता है और एक विशाल जनसमुदाय को भी संबोधित करता है। जैसे - नेतागण जनता को अपने विचारों से अवगत कराने के लिए संबोधित करता है। अतः इस दृष्टि से संप्रेषण सीमित या व्यापक भी हो सकता है।

भाषिक संप्रेषण में तीन बातें अनिवार्य हो जाती हैं - वक्ता, श्रोता तथा माध्यम। इनमें से किसी एक की अनुपस्थिति से संप्रेषण अधूरा रह जाता है।

संप्रेषण प्रक्रिया को भली भाँति समझने के लिए हम एक उदाहरण ले सकते हैं। कल्पना कीजिए कि दो मित्र फोन पर बातचीत कर रहे हैं। इस बातचीत के क्रम को हम इस तरह समझ सकते हैं --

पहला मित्र फोन पर नंबर मिलाता है। दूसरी तरफ घंटी बजती है। दूसरा मित्र चोंगा उठाकर उसे उत्तर देता है। इस तरह दोनों की बातचीत शुरू हो जाती है। इसमें पहले फोन का नंबर मिलाया जाना, फिर दूसरी तरफ घंटी का बजना, दूसरे मित्र का चोंगे पर उत्तर देना और उसकी ध्वनियों का वायु लहरियों में परिवर्तित होकर तार के माध्यम से दूसरे मित्र तक पहुँचना, आता है। दूसरे मित्र की श्रोत इंद्रियाँ इन ध्वनियों को ग्रहण करती हैं और विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से वे मस्तिष्क तक पहुँचती हैं। वहाँ इन ध्वनियों का अर्थ समझकर पहला मित्र, उसपर विचार करता है और फिर तदनुरूप अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। यह प्रक्रिया श्रोता और वक्ता के मध्य चलती रहती है। यहाँ फोन माध्यम की भूमिका निभाता है। इस तरह से संप्रेषण प्रक्रिया यहाँ पूरी होती है।

संप्रेषण के कुछ महत्त्वपूर्ण तत्त्व होते हैं जो संप्रेषण की सार्थकता के लिए आवश्यक हैं। ये हैं —

१. भाषिक तत्त्व

२. अभाषिक तत्त्व

३. दो व्यक्ति

४. कोड

१. **भाषिक तत्त्व** के अंतर्गत व्याकरण, उच्चारण अवयवों का सहयोग आदि आते हैं। सार्थक शब्दों का प्रयोग भी यहाँ महत्त्वपूर्ण है। इनके बिना संप्रेषण प्रायः असंभव हो जाता है।

२. **अभाषिक तत्त्व** संप्रेषण प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण तो होता है, पर अनिवार्य नहीं होता। इनके बिना भी संप्रेषण पूरा हो सकता है, पर उसकी सार्थकता पर प्रश्नचिह्न अवश्य लग जाता है। इनका दर्जा भाषिक तत्त्व की तुलना में गौण हो जाता है। इसमें कुछ बातें आती हैं; जैसे, ठीक तरह से बोलना। यदि वक्ता बहुत ही नीचे सुर में बोले तो श्रोता को उसका वक्तव्य समझने में कठिनाई होगी। इसी तरह यदि वह बहुत ऊँची आवाज में बोले या जल्दी-जल्दी बोले तो यह भी मुश्किल पैदा कर देता है।

संप्रेषण में यह जरूरी हो जाता है कि व्यक्ति ठीक से बोले, उसकी आवाज संतुलित हो तथा उच्चारण शुद्ध हो।

३. तीसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व यह है कि इसमें **दो व्यक्तियों का होना** आवश्यक होता है। हालाँकि प्रायः ऐसा भी देखा जाता है कि व्यक्ति अकेले में भी बोलता है। इस एक तरफा संवाद में उसकी कल्पना में दूसरा व्यक्ति भी परोक्ष रूप में उपस्थित रहता है। वह उसी से संबोधित होता है और कल्पना की कान से उसको सुनता भी है, परंतु ऐसे संवाद या संप्रेषण को हम बहुत सार्थक नहीं कह सकते हैं।

४. **कोड** : संप्रेषण के अंतर्गत कोड़ भी आता है। यह गुप्त या सांकेतिक भाषा है जिसका मुख्य प्रयोजन दूसरों से या शत्रुओं से अपनी बात या योजनाओं को गुप्त रखना है। इसका प्रयोग व्यापारिक अनुष्ठानों में, गुप्तचर विभागों में, सेना तथा स्काऊट आदि में मुख्य रूप से होता है।

संप्रेषण की सार्थकता के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वक्ता तथा श्रोता दोनों ही उसके माध्यम से परिचित हों। इसके बिना संप्रेषण का कोई अर्थ ही नहीं रह जाएगा। कल्पना कीजिए कि कोई, किसी अशिक्षित भारतीय से फर्राटेदार अंग्रेजी में बातें करे तो वह बिचारा उसका बिंदु, विसर्ग भी न समझ पाएगा। इसी कारण बहुत सारी मुश्किलें प्रायः संप्रेषण के सामने उठ खड़ी होती हैं। जैसे कोई व्यक्ति विदेश में जाए, जहाँ उसकी अपनी भाषा के अलावा अंग्रेजी का भी प्रचलन न हो; जैसे कि जापान, जर्मनी या रूस तो उसे भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। रातदिन आदिम मानव की तरह हाथ हिलाकर, विभिन्न भाव-भंगिमा कर न जाने वह अपनी कितनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाएगा। शायद अधिकतर उसे गलत बस में यात्रा करनी पड़े या मुर्गी के अंडे की जगह शुतुरमुर्ग के अंड़े खाने पड़े।

इन असुविधाओं को ध्यान में रखते हुए कई उपाय किए गए; जैसे, कृत्रिम भाषा

एसपरैंतो का निर्माण। इसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में कल्पित किया गया है। परंतु यह भी, इस समस्या का कोई स्थायी हल न ढूँढ़ सकी।

संप्रेषण सिर्फ मानव-समाज में ही प्रयुक्त हो, ऐसा नहीं है। यह जानवरों में भी किसी-न-किसी रूप में प्रचलित है। चाहे इसका रूप कितना ही अविकसित या सीमित क्यों न हो? जानवर भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संप्रेषण की सहायता लेता है। यह तो हमारे लिए आए दिन का आम-सा नजारा है कि किस तरह दो मुर्गे अपनी अकड़ी गर्दन के लाल-सुनहरे रोओं को फैलाकर किसी मोटी- गुदगुदी मुर्गी पर अपना अधिकार जता कर दूसरे को चेतावनी देता है, किस तरह कुत्ते अपनी दुम हिलाकर मालिक की खुशामद करते हैं।

जांतव संप्रेषण पर किए गए विद्वानों के विभिन्न शोध भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि जानवरों में भी संप्रेषण का प्रयोग होता है।

इस दिशा में 'कार्ल वॉनफ्रिश' का शोध 'वीज, देयर विजन केमीकल सेंसिज एण्ड लैंग्विज' काफी महत्त्वपूर्ण है। इसके अलावा 'कॉनरेड लॉरेंज' का कौओं पर किया गया अध्ययन भी काफी महत्त्वपूर्ण है। इस शोध में यह देखा गया है कि किस तरह से नर कौआ, मादा कौआ से विशेष ढंग से प्रणय निवेदन करता है और मादा कौआ किस तरह से प्रत्युत्तर में अपनी स्वीकृति या अस्वीकृति प्रकट करती है। उड़ान संप्रेषण में यह पाया गया है कि जब कौआ सुबह अपने घोंसले से उड़ता है तो अलग किस्म की ध्वनि निकालता है और जब लौटता है तब उसकी ध्वनि अलग होती है। इसी तरह से खतरे के आभास से, क्रोध से या भय से उसकी ध्वनि अलग-अलग निकलती है।

जानवर और मनुष्य के संप्रेषण में काफी अंतर होता है। आदमी के संप्रेषण में मुख्य रूप से भाषा का प्रयोग होता है, जब कि जानवरों का संप्रेषण अभाषिक होता है। वे ध्वनियों से अपना काम चलाते हैं। मनुष्य संप्रेषण में विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करता है जिनका उल्लेख हो चुका है। मनुष्य व्याकरण का प्रयोग करता है जब कि जानवर नहीं करता। इसके पीछे मानव का मस्तिष्क है, वह अधिक प्रखर बुद्धि रखता है, सोच सकता है तथा भाषा का प्रयोग भी कर सकता है।

उपरिलिखित तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि संप्रेषण क्या है, और इसकी भूमिका हमारे समाज और जीवन में क्या है। तमाम बातों को मद्दे नजर रखते हुए तथा इनके समुचित विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसका महत्त्व हमारे ही नहीं जानवरों के जीवन में भी है और हम अपनी हर मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति तथा भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए इसपर निर्भर करते हैं। इसका संबंध मानव के जीवन से, समाज से और सभ्यता से अटूट है जिसकी महत्ता और अनिवार्यता पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता।

❖ ❖ ❖